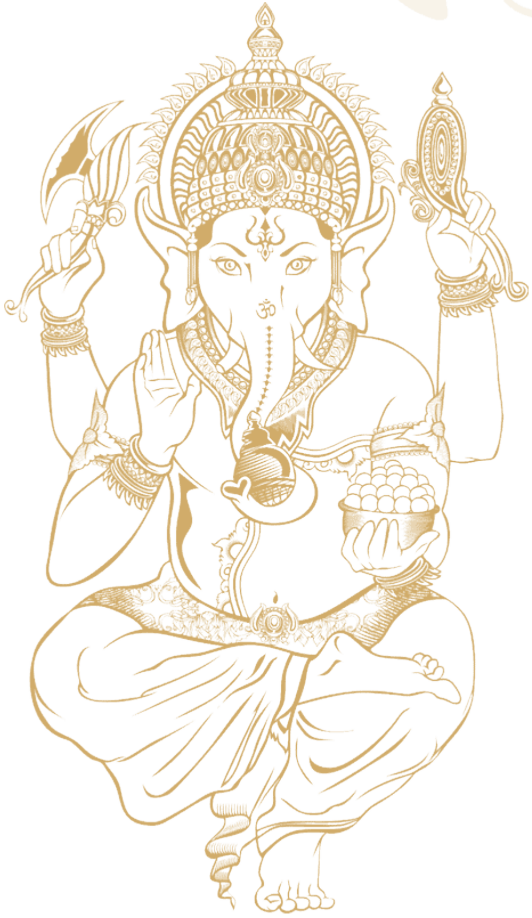

Mrs. Shilpa Gupta

22 Oct 1985

01:30 PM

Jammu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121599601

तिथि 22/10/1985 **समय** 13:30:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Jammu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:39:20
अक्षांश 32:42:00 उत्तर **रेखांश** 74:52:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:30:32 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	15:02:16 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:15:31 घं	योनि	सिंह
सूर्योदय	06:39:51 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	17:49:55 घं	वर्ण	वैश्य
चैत्रादि संवत	2042	वश्य	जलचर
शक संवत	1907	वर्ग	मार्जार
मास	आश्विन	युँजा	अन्त्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	भूमि
तिथि	10	जन्म नामाक्षर	गा-गामिनी
नक्षत्र	धनिष्ठा	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
योग	शूल	होरा	गुरु
करण	तैतिल	चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी		योगिनी	
मंगल 6वर्ष 11मा 28दि		पिंगला 1वर्ष 11मा 29दि	
गुरु		धान्या	
20/10/2010		22/10/2023	
20/10/2026		22/10/2026	
गुरु	07/12/2012	धान्या	21/01/2024
शनि	21/06/2015	भ्रामरी	22/05/2024
बुध	26/09/2017	भद्रिका	21/10/2024
केतु	02/09/2018	उल्का	22/04/2025
शुक्र	03/05/2021	सिद्धा	21/11/2025
सूर्य	19/02/2022	संकटा	22/07/2026
चन्द्र	21/06/2023	मंगला	22/08/2026
मंगल	27/05/2024	पिंगला	22/10/2026
राहु	20/10/2026		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:03:58	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	बुध	---	0:00			
सूर्य			05:12:34	तुला	चित्रा	4	मंगल	सूर्य	नीच राशि	1.76	पुत्र	पितृ	जन्म
चंद्र			23:20:39	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	मंगल	सम राशि	1.09	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			03:01:03	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	शनि	शत्रु राशि	0.95	कलत्र	भ्रातृ	मित्र
बुध			23:37:24	तुला	विशाखा	2	गुरु	शनि	मित्र राशि	1.15	आत्मा	ज्ञाति	विपत
गुरु			14:03:21	मक	श्रवण	2	चंद्र	गुरु	नीच राशि	1.20	भ्रातृ	धन	अतिमित्र
शुक्र			13:31:33	कन्या	हस्त	2	चंद्र	राहु	नीच राशि	1.14	मातृ	कलत्र	अतिमित्र
शनि			03:22:40	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	शत्रु राशि	1.05	ज्ञाति	आयु	क्षेम
राहु	व		15:36:37	मेष	भरणी	1	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		15:36:37	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	सम राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

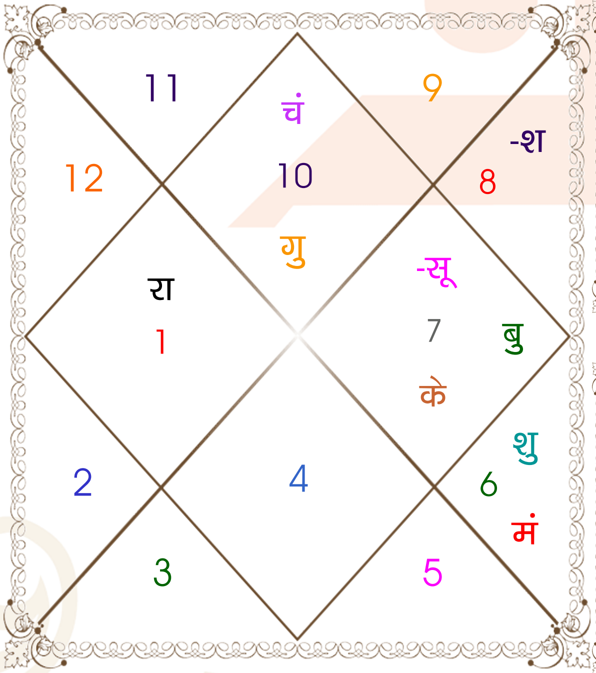

चन्द्र कुंडली

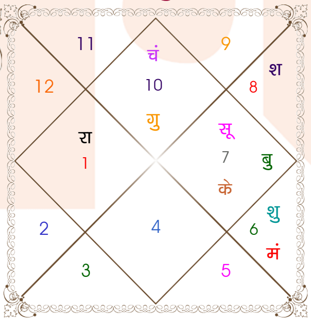

नवमांश कुंडली

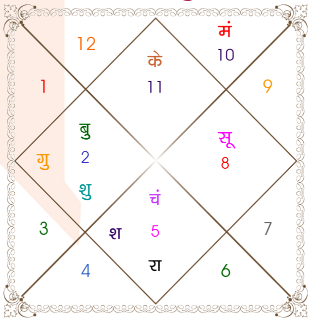

सर्वाष्टकवर्ग

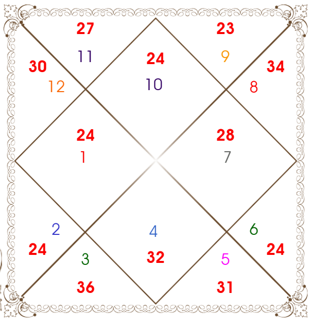

दशमांश कुंडली

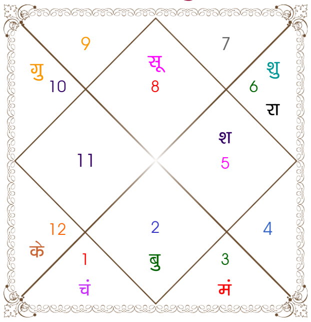

नक्षत्रफल

आप धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि सिंह, वर्ग मार्जार, वर्ण वैश्य, गण राक्षस तथा नाड़ी मध्य होगी। नक्षत्र के प्रथम चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ग" या "गा" अक्षर से होगा। यथा- गायत्री आप एक निर्मल चरित्र की महिला होंगी तथा आपका अन्य जनों से अत्यन्त ही विनम्र व्यवहार रहेगा। अतः सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आपसी वार्तालाप में भी आप अत्यन्त ही चतुर होंगी तथा अन्य जनों को अपनी बातों से सहमत करने में सफलता प्राप्त करेंगी। धन धान्य से आप हमेशा सम्पन्न रहेंगी तथा समाज में एक धनाढ्य महिला के रूप में जानी जाएंगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल का अभाव आप में नहीं रहेगा। आप के मन में दया का भाव भी प्रारम्भ से ही विद्य मान रहेगा। अतः दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों को यथा शक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति तथा प्रभाव व्याप्त रहेगा।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आप जीवन में कभी भी निराशा की अनुभूति नहीं करेंगी तथा प्रायः आशान्वित ही रहेंगी। अतः आपको मानसिक कष्ट अल्प मात्रा में ही प्राप्त होंगे। आपकी जाँघों तथा कंठ भाग में स्थूलता की प्रबलता रहेगी तथा जीवन में आप सर्वप्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक उनका उपभोग करेंगी।

आशालुर्वसुमान वसूडुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

संगीतशास्त्र अथवा गीतविद्या में आपकी नैसर्गिक रूचि रहेगी अतः इसका यत्नपूर्वक आप हमेशा विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा इस क्षेत्र में आपको पूर्ण यश की भी प्राप्ति होगी तथा आपके प्रशंसकों की संख्या भी अधिक रहेगी। साथ ही परिवारिक जनों के मध्य आप पूर्ण सम्मान तथा आदर की प्राप्ति करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन काल में आप विविध प्रकार के बहुमूल्य सोने चांदी आदि के आभूषणों से भी सुशोभित रह सकेंगी। साथ ही कई लोगों के मध्य आप एक उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित महिला होंगी एवं

सभी लोग आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

आपके मन में दानशीलता का भाव स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहेगा। अतः दीन दुःखियों तथा जरूरतमन्द लोगों या सस्थाओं को आप यथा शक्ति समय समय पर अपनी इस प्रवृति से कृतार्थ करती रहेंगी। इसमें आप की मान सम्मान एवं यश में सर्वदा वृद्धि होती रहेगी। आप एक बहादुर महिला होंगी तथा साहस एवं निर्भयता से अपनी सांसारिक समस्याओं का समाधान करेंगी लेकिन धन के प्रति आप के मन में लालच का भाव रहेगा। अतः इससे कभी कभी आपको अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का भी सामना करना पड़ेगा एवं अन्य लोगों में भी आपके प्रति आदर की भावना में न्यूनता आएगी।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्णपाद में उत्पन्न जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में सर्वप्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।आप एक चतुर तथा बुद्धिमता महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी ऊँचाई अधिक होगी तथा ललाट भी विस्तृत रहेगा। आपकी आखें सुन्दरता से युक्त होंगी एवं शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। गीत शास्त्र के प्रति आपकी रूचि प्रारम्भ से ही रहेगी अतः इस क्षेत्र में आप सफल एवं ख्याति

अर्जित कर सकेंगी। शीत से आप व्याकुलता की अनुभूति करेंगी तथा इसको सहन करने में आप असमर्थता का अहसास करेंगी। सत्य के प्रति आप निष्ठावान होंगी एवं जीवन में इसका पालन करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। दिखावे के लिए आप धर्म में भी अपनी श्रद्धा भाव का प्रदर्शन अन्य लोगों के समक्ष करेंगी तथा नियमपूर्वक धार्मिक कार्यकलापों को भी सम्पन्न करेंगी। समाज में तथा सभी वर्गो में आप एक आदरणीय महिला होंगी। तथा उनमें आप समान रूप से लोकप्रियता अर्जित करेंगी। क्रोध का भाव भी आप में अल्प मात्रा में ही रहेगा। समाज में सभी लोगों के प्रति आपके मन में स्नेह एवं प्रेम का भाव रहेगा तथा घृणा वैमनस्य के भाव का आप में प्रायः अभाव ही दृष्टिगोचर होगा । आप अपने से अधिक आयु वाले लोगों से मित्रता करने की इच्छुक रहेंगी एवं उन्हीं से आपकी घनिष्ठता भी रहेगी। लेखन कार्य में आप रूचिशील होने के कारण कविता सृजन आदि में भी सफल हो सकती हैं। आप में पूणोत्साह का अभाव रहेगा तथा प्रवृति में भी लोलुपता की प्रधानता रहेगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने पति एवं पुत्र सहित नित्य परिवार के पालन में व्यस्त रहेंगी। आपकी कमर भी पतली रहेगी। आप में आलस्य का भाव भी रहेगा। अतः आपके सांसारिक कार्य धीरे धीरे ही सम्पन्न होगे परन्तु आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी। अतः अधिकाँश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही अल्प परिश्रम द्वारा सम्पन्न हो जाएंगे। आप भ्रमण तथा यात्रा आदि करने में विशेष रूचिशील रहेंगी तथा आपका अधिकाँश समय इसी पर व्यतीत होगा। आपका शारीरिक बल मध्यम रहेगा परन्तु साहस एवं निर्भयता के गुण से आप युक्त रहेंगी। अतः कठिन कार्यो को करने तथा अगम्य स्थानो पर जाने के लिए नित्य उत्सुक रहेंगी। आप कभी कभी स्वभाव से अन्य जनों के प्रति कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगी। जिससे लोग आपसे असन्तुष्ट होंगे। इसके अतिरिक्त वात जनित रोगों से आप कभी कभी व्याकुल रहेंगी एवं इनसे कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। साथ ही आप में सत्वगुणों की भी प्रधानता रहेगी तथा सम्मान पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आपका परिवार में सामान्य रूप से ही आदर सम्मान होगा परन्तु पारिवारिक परम्परा तथा मर्यादा का अनुपालन करने तथा उसकी वृद्धि करने में आपका सहयोग विशेष रूप से रहेगा। आप अपने पति को पूर्ण रूप से वश में रखेंगी तथा वे भी समस्त सांसारिक कार्यों को

आपके कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे तथा इन समस्याओं के स्वतंत्र निर्णय लेने में वे अपने को असमर्थ महसूस करेंगे। एक विदुषी के रूप में भी समाज में आप सम्मान तथा ख्याति अर्जित करेंगी। माता के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान की भावना विद्य मान रहेगी एवं पुत्र संतति से युक्त होकर हमेशा इनसे सुख की प्राप्ति करेंगी। भाइयों से आपका विशेष स्नेह रहेगा एवं इनको पूर्ण रूप से आप सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही आप एक धनाढ्य महिला भी रहेंगी एवं समाज एवं पारिवाररिक जनों के लिए समय समय पर सहयोग की भावना का प्रदर्शन करती रहेंगी। आपके परिवार के सदस्यों की संख्या भी अधिक होगी। आप सुख प्राप्त करने के लिए सदैव चिन्तन शील रहेंगी एवं सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आप को किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी के धन सम्पति को प्राप्त करने का सुअवसर जीवन में प्राप्त होगा तथा सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। आप दूसरे लोगों की भलाई आदि के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक उनकी समस्याओं के समाधान के लिए अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। साथ ही सलाह देने या परस्पर मंत्रणा में भी आप निपुण रहेंगी तथा अन्य लोग आपकी इस प्रवृति से नित्य लाभान्वित भी होते रहेंगे। बन्धुवर्ग का आप पूर्ण रूप से पालन करेंगी तथा सुख दुःख में नित्य उनकी सहायता करती रहेंगी। इसके साथ ही आप में बहादुरी के गुण भी विद्यमान रहेंगे तथा साहस एवं निर्भयता से अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीत शास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी तथा इसमें ख्याति अर्जित करने में आप नित्य सफल रहेंगी। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता भी दर्शनीय होगी एवं इससे आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप का स्वभाव व्यर्थ तथा अधिक बोलने

वाला रहेगा। साथ ही हृदय में भी दया के भाव की नयूनता रहेगा। आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहस पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप में क्रोध की अधिकता रहेगी तथा समय समय पर इसभाव का आप प्रदर्शन भी करेंगी। आप एक बलशाली महिला होंगी तथा अन्य जनों से विवाद भी आपके चलते रहेंगे।

जीवनमें आप प्रमेह या उन्माद रोगों से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकती हैं। साथ ही आप के सौन्दर्य में भी आकर्षण मध्यम होगा। इसके अतिरिक्त आप यदा कदा अपने सम्भाषण में कठोर शब्दों का भी प्रयोग करेंगी जिससे अन्य लोग प्रायः अप्रसन्न रहेंगे। अतः अतः अपने वार्तालाप में यत्नपनर्वक मधुर शब्दों का प्रयोग कृें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा आप नियमपूर्वक इसका अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आप सत्कार्यों को करने में हमेशा रूचिशील रहेंगी तथा ऐसे कार्यों को प्रायः सम्पन्न करेंगी जिससे अन्य लोग भी लाभान्वित हो सके। अतः अपने इन कार्यों में आपको सामाजिक जनों से पूर्ण आदर तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। सद्गुणों से आप सुशोभित रहेंगी एवं जीवन में पूर्ण रूपेण इनका अनुपालन करेंगी। परिवार की सुख समृद्धि के लिए आप चिन्तनशील रहेंगी तथा अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से इसका पूर्ण विकास करेंगी।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी

आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा सर्वदा कष्टकारी एवं अशुभ रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयदि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगल वार, चतुर्थ प्रहर तथा वृशिचक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा अथवा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंच

धातु, तिल, तेल, कम्बल या चर्मपादुकाओं का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा समस्त शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता भी प्राप्त होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।